Cover Page
DOI: http://ijmer.in.doi./2021/10.06.200

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:6(10), June:2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication:http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 10th June - Publication Date:30th June 2021

लैंगिक भिन्नता व समायोजन : संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

[1] डॉ0 नलिनी मिश्रा, [2] राशी रस्तोगी
[1] सहायक आचार्या, [2] शोधार्थी
शिक्षा शास्त्र विभाग
ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय
लखनऊ

सारांश

मानव जीवन विकास पर निर्भर करता है। जब मानव के विकास में कोई बाधा नहीं उत्पन्न होती है तो वह प्रसन्न हो जाता है और वह सफलता की तरफ अग्रसर होता है, जिससे उसका व्यवहार समायोजित माना जाता है। एक व्यक्ति को थोड़ी सी सफलता मिलने पर वह अपने पूरे मन उत्साह के साथ परिस्थितियों से तालमेल बैठाता हुआ अपने जीवन की सफलता को निर्धारित करता है। व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने लैंगिक भिन्नता व समायोजन : संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण को अपने शोध पत्र का विषय बनाया है।

प्रस्तावना

समायोजन मानव के जीवन की एक सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मानव अपने जीवन में आने आने वाली प्रत्येक बाधा व समस्याओं का सामना अत्यंत ही सूझबूझ ढंग से बुद्धिमता पूर्वक करता है। एक व्यक्ति चाहे वह कितना भी प्रभावशाली हो उसकी प्रभावशीलता इस बात को सिद्ध करती है कि वह अपनी समस्याओं से कैसे समाधान प्राप्त करेगा । एक बुद्धिमान व्यक्ति का समायोजन तभी उत्तम होगा जब वह अपने आप को वातावरण के अनुकूल ढाल पाए और वातावरण को अपने अनुकूल। व्यक्ति की इच्छाओं, विचारों व प्रेरणाओं में संबंध में जितना ही अधिक होता है समायोजन भी उतना ही अच्छा होता । समायोजन की भूमिका में लिंग का एक महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि लैंगिक भिन्नता के कारण ही व्यक्ति अपने घर, विद्यालय, परिवार ,समाज एवं राष्ट्र से समायोजन की भूमिका में अपना सफल योगदान देता । प्रत्येक शोध पत्र का कोई न कोई महत्व होता है समस्या के महत्व को ध्यान में रखकर ही समस्या का चुनाव आवश्यक एवं महत्वपूर्ण हो जाता है जैसा कि अध्ययन के शीर्षक से ही स्पष्ट है कि इस अध्ययन के अंतर्गत संबंधित साहित्य के सवेक्षण के माध्यम से लैंगिक भिन्नता व समायोजन को जानने का प्रयास किया गया है ।

Cover Page
DOI: http://ijmer.in.doi./2021/10.06.200

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:6(10), June:2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication:http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 10th June - Publication Date:30th June 2021

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

शाक्य (2010) ने इन्दौर शहर के महाविद्यालयी स्तर के छात्रावासी व गैर–छात्रावासी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व समायोजन का अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष थे– अंतर्मुखी विद्यार्थियों का समायोजन बहिर्मुखी विद्यार्थियों के समायोजन से सार्थक रूप से बेहतर पाया गया । अंतर्मुखी विद्यार्थियों का समायोजन उभयमुखी विद्यार्थियों के समायोजन से सार्थक रूप से बेहतर पाया गया उभयमुखी विद्यार्थियों का समायोजन बहिर्मुखी विद्यार्थियों के समायोजन से सार्थक रूप से बेहतर पाया गया । कला–संकाय व विज्ञान–संकाय के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया । विद्यार्थियों के समायोजन पर निवास पृष्ठभूमि व लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

समैया (2010) ने सामान्य एवं विकलांग छात्र किशोरों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष थे – साामान्य व विकलांग छात्र, साामान्य व विकलांग छात्राओं एवं साामान्य एवं विकलांग किशोरों के समग्र समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है। सामान्य किशारों एवं विकलांग किशोरों का समायोजन उच्चस्तरीय है।

मोदी (2010) ने हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध के निष्कर्ष के रूप में पाया कि हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों में संवेगात्मक, सामाजिक व शैक्षिक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं है।

दुबे (2011) ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन का प्रभाव का अध्ययन किया। इन्होंने अपने शोध अध्ययन के निष्कर्षो में पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, उनके समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध होता है।

इंगले (2011) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्थिति, आवासीय पृष्ठभूमि एवं समायोजन के प्रभाव का अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष थे– उच्च सामाजिक समायोजन वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, निम्न सामाजिक समायोजन के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पायी गयी।

बासु (2012) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के समायोजन का अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष थे – महिला माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं का समायोजन पुरुष माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की तुलना में काफी बेहतर है। संयुक्त परिवारों के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का समायोजन एकल परिवारों के छात्रों की तुलना में काफी बेहतर है। अंग्रेंजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों का समायोजन हिंदी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की तुलना में काफी बेहतर है।

जोशी व नट (2013) ने नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन किया। इन्होंने अपने शोध अध्ययन के निष्कर्षो में पाया कि नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर

Cover Page
DOI: http://ijmer.in.doi./2021/10.06.200

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:6(10), June:2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication:http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 10th June - Publication Date:30th June 2021

विद्यालय पृष्ठभूमि का सार्थक प्रभाव पाया गया तथा बालिकाओं का समायोजन बालकों के समायोजन से अच्छा पाया गया।

राजश्री (2013) ने महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य, जीवन सन्तुष्टि एवं समायोजन पर जीवन मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष रुप मे पाया कि कार्यरत महिलाओं का समायोजन औसत स्तर का है। समायोजन के विविध आयामों गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, भावात्मक तथा व्यावसायिक समायोजन भी औसत स्तर के रहे। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं उच्च शैक्षिक स्तर की कार्यरत महिलाओं का समायोजन, निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं निम्न शैक्षिक स्तर की कार्यरत महिलाओं की तुलना में निम्न पाया गया। जीवन मूल्य एवं समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। जिससे स्पष्ट है कि जीवन मूल्य समायोजन को सकारात्मक एवं सार्थक रूप से प्रभावित करते है। कार्यरत महिलाओं का शैक्षिक स्तर उनके गृह समायोजन व स्वास्थ्य समायोजन को सार्थक रूप से प्रभावित करता है। सामाजिक समायोजन पर किसी भी प्रकार का प्रभाव नहीं होता है। कार्यरत महिलाओं के संवेगात्मक समायोजन पर शैक्षिक स्तर तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पड़ता है, जबकि व्यावसायिक समायोजन पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पड़ता है। महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य, जीवन सन्तुष्टि एवं समायोजन पर धार्मिक मूल्य, शैक्षिक स्तर तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है।

भूषण (2013) ने कानपुर नगर के नियमित एवं स्ववित्तपोषित छात्राध्यापकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया। इन्होंने अपने शोध अध्ययन के निष्कर्षो में पाया कि नियमित एवं स्ववित्तपोषित छात्राध्यापकों के गृह समायोजन, संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन, विद्यालयी समायोजन एवं संपूर्ण समायोजन में कोई अन्तर नहीं होता है।

कोठारी एवं लोधा (2014) ने छात्रों के शैक्षिक समायोजन का विद्यालयों के प्रकारों में परस्पर संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षो से यह ज्ञात हुआ कि समायोजन की दृष्टि से निजी एवं सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं का शैक्षिक समार्योजन समान है। समायोजन के क्षेत्र में संवेगात्मक समायोजन की दृष्टि से निजी एवं सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं में सार्थक अन्तर पाया गया है। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं का संवेगात्मक समायोजन ज्यादा है। सामाजिक समायोजन की दृष्टि से निजी एवं सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं की अभिव्यक्त समायोजन सूची में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। समायोजन के क्षेत्र में शैक्षिक समायोजन की दृष्टि से निजी एवं सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाली छात्राओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

Cover Page
DOI: http://ijmer.in.doi./2021/10.06.200

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:6(10), June:2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication:http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 10th June - Publication Date:30th June 2021

डेब (2015) ने साउथ एशियन अमेरिकन कॉंलेज के विद्यार्थियों के समायोजन पर पीढ़ीगत स्थिति के प्रभाव का परीक्षण किया। अध्ययन के परिणामों के आधार पर इन्होने बताया कि प्रथम पीढ़ी के कॉंलेज के विद्यार्थियों ने निम्न स्तर के सामाजिक एवं शैक्षणिक समायोजन का प्रदर्शन किया।

बीलाल ,गुल एवं गनाल (2015) ने स्नातक विद्यार्थियों का लिंग एवं शैक्षिक वर्ग के संदर्भ में समायोजन समस्या का अध्ययन किया। अध्ययन के आधार पर इन्होने बताया कि स्नातक छात्र एवं छात्रायें अपने घर के समायोजन, भावनात्मक समायोजन और समग्र समायोजन के संबंध में काफी भिन्न होते है जबकि सामाजिक समायोजन के संबंध में महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं होते है। जबकि विज्ञान एवं कला के छात्र घर के समायोजन, भावनात्मक समायोजन और समग्र समायोजन के संबंध में महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं होते है।

संधू एवं जरबी (2015) ने चंडीगढ़ के सरकारी स्कूलों में छात्रों के सीखने में विकलांगता के साथ समायोजन पैटर्न पर अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य था – सरकारी स्कूलों में छात्रों के सीखने में विकलांगता के साथ समायोजन पैटर्न का अध्ययन करना। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम समायोजन के तीन क्षेत्रों में कमी का संकेत देते है। छात्रों का शैक्षिक समायोजन के साथ – साथ भावात्मक एवं सामाजिक समायोजन में गंभीर समस्या पाया गया। इन्होनें 51.4 प्रतिशत, 42.8 प्रतिशत एवं 31.4 प्रतिशत छात्रों का शैक्षिक समायोजन, भावात्मक एवं सामाजिक समायोजन असंतोषजनक पाया ।

राजकोनवार, दत्ता एवं सोनी (2015) ने आसाम में नेत्रहीन विकलांग विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन किया। अध्ययन के आधार पर इन्होने बताया कि नेत्रहीन विकलांग विद्यार्थियों का समायोजन समान पाया गया साथ ही नेत्रहीन विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सबंध नहीं था।

अहमदी (2016) ने कॉंलेज के अंतराष्ट्रीय विद्यार्थियों के समायोजन, पृष्ठभूमि की विशेषताओं और छात्र की सफलता के मध्य संबंध पर शोध कार्य किया। अध्ययन के परिणामों के आधार पर इन्होने बताया कि अंतराष्ट्रीय विद्यार्थियों के उम्र, शिक्षा के स्तर, स्कूल की पढ़ाई, क्षेत्र (मूल देश), वैवाहिक स्थिति, पिता की शिक्षा व कॉंलेज के उप – मानक के समायोजन के साथ अंग्रजी भाषा के कौशल के मध्य सांख्यिकिय रूप से सार्थक सहसबंध थे।

हिरल (2016) ने कॉंलेज के विद्यार्थियों पर समायोजन, संवेगात्मक परिपक्वता एवं स्व प्रत्यय का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों के आधार पर इन्होने बताया कि कॉंलेज के विद्यार्थियों में समायोजन, संवेगात्मक परिपक्वता एवं स्व प्रत्यय के मध्य काई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

Cover Page
DOI: http://ijmer.in.doi./2021/10.06.200
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:6(10), June:2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication:http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 10th June - Publication Date:30th June 2021

सरकार व बनिक (2017) ने किशोर विद्यार्थियों के समायोजन व शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन किया। इन्होनें अपने शोध अध्ययन के निष्कर्षो में यह पाया कि किशोर विद्यार्थियों के समायोजन व शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

सिंह, एडबोर व ढिंगरा (2017) ने कॉलेज जाने वाले प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के मध्य गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन का अध्ययन किया। अध्ययन के आधार पर इन्होने बताया कि विद्यार्थियों को कॉलेज के अस्वास्थ्यकर तत्वों के प्रति अधिक सर्तक रहना पड़ेगा जोकि विद्यार्थियों में उच्च स्तर के समायोजन की समस्याओं के अनुभव में योगदान देगा।

पार्थीपन एवं वेन्कटरथनम (2017) ने हाईस्कूल अध्यापक के पेशेवर समायोजन का शिक्षण के प्रति उपलब्धि संदर्भ में अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों के आधार पर इन्होने बताया कि हाईस्कूल अध्यापक के पेशेवर समायोजन का शिक्षण के प्रति उपलब्धि मे कोई सबंध नहीं है।

वाधमान (2018) ने पंचकुला के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन का अध्ययन किया। इन्होनें अपने शोध अध्ययन के निष्कर्षो में यह पाया कि लड़कियों का समग्र समायोजन लड़को की तुलना में बेहतर है। लड़कियाँ भावनात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से लड़कों की तुलना में अधिक समायोजित है। शहरी विद्यार्थी ग्रामीण समकक्षों की तुलना में भावनात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से अधिक समायोजित पाए गए।

बीबी, वांग, गाफरी एवं इकबाल (2018) ने कॉलेज विद्यार्थियों के सामाजिक उपलब्धि के लक्ष्यों और शैक्षणिक समायोजन का अध्ययन किया। इन्होनें अपने शोध अध्ययन के निष्कर्षो में यह पाया कि – कॉलेज छात्रों मे छात्राओं की तुलना मे सामाजिक उपलब्धि के लक्ष्यों और शैक्षणिक समायोजन अधिक पाया गया।

चेन (2019) ने चीनी किशोरों में आक्रामक सहकर्मी समूहों के साथ संबद्धता, स्वायत्तता और समायोजन पर शोध प्रबंध किया। प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य समूह स्तरीय आक्रामकता और सामाजिक, व्यावहारिक, विद्यालय व मनोवैज्ञानिक समायोजन के मध्य सबंधों की जाँच करना था। इन्होनें अपने शोध अध्ययन के निष्कर्षो में यह पाया कि समूह स्तरीय आक्रामकता – सामाजिक, व्यावहारिक, विद्यालय व मनोवैज्ञानिक समायोजन में कुरूपता से सबंधित थी।

तमन्नाइफार एवं रेजाई (2020) ने व्यक्तित्व के लक्षण एवं मनौवेज्ञानिक पूंजी के आधार पर शैक्षणिक समायोजन के पूर्वानुमान का अध्ययन किया। इन्होनें अपने शोध अध्ययन के निष्कर्षो में यह पाया कि व्यक्तित्व के लक्षण एवं मनौवेज्ञानिक पूंजी के आधार पर शैक्षणिक समायोजन में सबंध हैं।

Cover Page
DOI: http://ijmer.in.doi./2021/10.06.200
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:6(10), June:2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication:http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 10th June - Publication Date:30th June 2021

सुझाव

1.शिक्षकों द्वारा विद्यालय में अध्यापन का कार्य व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए, ताकि शिक्षक छात्र के मध्य अन्तःक्रिया पर विशेष ध्यान दिया जा सके।

2.शिक्षकों को अपनी पूर्ण योग्यता का सदुपयोग करते हुए विद्यार्थियों की समस्या को हल करने में सार्थक पहल कर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। समस्या का समाधान होने पर ही विद्यार्थी अपने आपको समायोजित कर पायेंगें।

3.कक्षागत अध्ययन कार्यों में शिक्षण विधियों एवं विधियों का उपयोग अधिकतम किया जाए जिनमें बच्चों की सक्रिय सहभागिता हो।

4.बालक के विचार सृजनात्मक तथा कल्पनाशील होते हैं। प्रत्येक वस्तु के उपयोग एवं निर्माण में उसका अपना दृष्टिकोण होता है अतः शिक्षक को बालक की मनोदशा समझकर उचित मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन देकर सही दिशा दिखानी चाहिए।

5.शिक्षण प्रक्रिया में समस्या समाधान विधियों का प्रयोग शिक्षकों करना चाहिए। बच्चे स्वयं शिक्षक के मार्गदर्शन में समस्याओं के समाधान करें एवं तार्किक धनात्मक क्षमता को विकसित करने हेतु क्या, क्यों, कैसे अवधारणात्मक प्रश्नों का प्रयोग कक्षा में किया जाए।

6.शिक्षकों को अपनी पूर्ण योग्यता का सदुपयोग करते हुए विद्यार्थियों की समस्या को हल करने में सार्थक पहल कर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। समस्या का समाधान होने पर ही विद्यार्थी अपने आप को समायोजित कर पाएंगे।

7.शिक्षक कक्षा में अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की पहचान कर उन्हें प्रोत्साहित करें तथा उन्हें विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने हेतु प्रेरित करें जिससे उनमें सृजनात्मकता एवं आत्मविश्वास की वृद्धि हो।

8.अभिभावकों को अपने बच्चों को स्कूल में होने वाली विभिन्न क्रियाकलापों में भाग लेने में प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे छात्र अपनी क्षमताओं को पहचान सकेंगे एवं उनमें आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।

9.परिवार एवं विद्यालय का वातावरण समायोजन के विकास के अनुरूप शांत एवं तनाव रहित हशिक्षक शिक्षक द्वारा विद्यालय एवं बालक की शिक्षा, पाठ्यक्रम एवं विद्यालय आधारित गतिविधियों पर निरंतर ध्यान देते हुए संबंधित समस्याओं का निराकरण करना चाहिए।

10.समय–समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, निर्देशन एवं परामर्श केंद्रों में परामर्श के कार्यक्रम आयोजित होने चाहिए।

11.संज्ञानात्मक क्षेत्रों के साथ–साथ खेलकूद, योगा, सांस्कृतिक गतिविधियों एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा तथा व्यक्तित्व विकास हेतु प्रशासन द्वारा समय–समय पर विद्यालयों में कार्यक्रमों का निर्देशन किया जाना चाहिए एवं ख्याति प्राप्त शिक्षकों शिक्षाविदों एवं समाजसेवियों से विद्यार्थियों को बातचीत के अवसर दिए जाएं।

Cover Page
DOI: http://ijmer.in.doi./2021/10.06.200

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :7.816(2021); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:6(10), June:2021
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in
Digital certificate of publication:http://ijmer.in/pdf/e-Certificate%20of%20Publication-IJMER.pdf
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 10th June - Publication Date:30th June 2021

12.शिक्षकों को समय समय पर उत्तम कार्य हेतु प्रशंसा पुरस्कार आदि के द्वारा विद्यार्थियों को प्रोत्साहित भी किया जाना चाहिए जिससे वे अपने सफलतापूर्वक समायोजन कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

जायसवाल, सीताराम (२००६). समायोजन विज्ञान, लक्ष्मीनारायण , आगरा

- Asija, A. (2017). A study of vocational interest of the adolescents in relation to their intelligence and socio – economic status. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, 36(4), 7009 – 7013. https://doi.org/10.21922/srjis.v4i36.10074
- Ahmadi, Y., G. (2016). International students adjustment to college: The relationship between adjustment, background characteristics and students success [Doctoral thesis, St. Cloud State University]. https://repository.stcloudstate.edu/hied_etds/8
- Bilal, S., Gul, A., & Ganal, y., M. (2015). Adjustment problems of Kashmari graduates students in relation to their gender and educational stream. International Journal of Advanced Scientific and Technical Research, 7(5), 346 -354.
- Bibi, S., Wang, Z., Ghaffari, S., A., & Iqbal, Z. (2018). Social achievement goals and academic adjustment among college students: Data from Pakistan. European Online Journal of Natural and Social Sciences, 7(3), 588-593.
- Chen, L. (2019). Affiliation with aggressive peer groups, autonomy and adjustment in Chinese adolescents [Doctoral dissertation, University of Pennsylvania]. Publicly Accessible Penn Dissertations. 3260.
- Deb, M. (2015). The effects of generational status on college adjustment and psychological well being among South Asian American college students [Doctoral dissertation, University of lowa]. https://doi.org/10.17077/etd.21mo4bu9
- Hiral, S. (2016). Study on adjustment emotional maturity and self concept among college students [Doctoral thesis, University of Lucknow]. https:// hdl.handle.net/10603/130613
- Partheepan, S., & Venkatarathanam, B. (2017). A study of professional adjustment of high school teacher in relation to their attitude towards teaching in Thiruvallar district. International Educational Scientific Research Journal,3(7). 10.21276/2455-295X
- Rajkonwar,S. Dutta, J., & Soni, C., J. (2015). Adjustment and academic achievement of visually handicapped school children in Assam. International Journal of Science and Research, 4(4), 1228- 1235.
- Singh, M. (2018). Assessment of vocational interests of Pahadi & Bakarwal school students in relation to their gender. International Journal of Recent Scientific Research, 9(3), 24817 – 24819. http://dx.doi.org/10.24327/ijrsr.2018.0903.1731
- Sarkar, S.,& Banik, S. (2017). A study on the adjustment and academic achievement of adolescent students. International Journal of Research Granthaalayah,5(6). 659 -668. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v5.i6.2017.2098.
- Sharma, S., Sandhu, P., & Zarabi D. (2015). Adjustment patterns of students with learning disability in Government schools of Chandigarh. International Journal of Educational and Psychological Research, 4(4).
- Singh, P., Edbor, A., & Dhingra, J. (2017). Home, health, social, and emotional adjustment among first year college going students. Global Journal for Research Analysis, 6(3), 100-103.
- Tamannaeifar, M., & Rezaei, H. (2020). Predicting adjustment based on personality traits and psychological capital. Journal of Practice in Clinical Psychology, 8(1), 27-38. https://doi.org/10.32598/jpcp.8.1.29
- Wadhawan, K. (2018). A study of emotional, social, and educational adjustment of senior secondary students of Panchkula. International Journal of Research in Social Science, 8(4), 793 – 803.